संधि

संधि की परिभाषा

संधि का अर्थ है मेल। दो वर्णों के आपसी मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे –

विद्या	+	आलय	=	विद्यालय
(शिक्षा	+	घर	=	जिस घर में शिक्षा ग्रहण कि जाए)
हिम	+	आलय	=	हिमालय
(बर्फ	+	घर	=	जिस स्थान पर बर्फ हो)
सत्	+	जन	=	सज्जन।
मन:	+	बल	=	मनोबल।

संधि के भेद :-

संधि तीन प्रकार के होते हैं; ये निम्नलिखित हैं -

(क) स्वर संधि

(ख) व्यंजन संधि

(ग) विसर्ग संधि

स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं; जैसे -

राम	+	अवतार	=	रामावतार
अ	+	अ	=	आ
कृष्ण	+	अवतार	=	कृष्णावतार
अ	+	अ	=	आ

देह	+	अवसान	=	देहावसान
अ	+	अ	=	आ
महा	+	आशय	=	महाशय
आ	+	आ	=	आ

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है -

(क) दीर्घ संधि

(ख) गुण संधि

(ग) वृद्धि संधि

(घ) यण संधि

(ङ) अयादि संधि

(क) **<u>दीर्घ संधि</u>:-**

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ अथवा आ, ई, ऊ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा आ, ई, ऊ आ जाए तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं;

जैसे -

<u>अ और आ की संधि</u> :-

1.

अ + अ = आ -	धर्म	+	अर्थ	= धर्मार्थ
	भाव	+	अर्थ	= भावार्थ
	शब्द	+	अर्थ	= शब्दार्थ
अ + आ = आ -	हिम	+	आलय	= हिमालय

छात्र + आवास = छात्रावास

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

आ + आ = आ - विद्या + आलय = विद्यालय

महा + आशय = महाशय

2.

<u>इ और ई की संधि</u> :-

इ + इ = ई	-	रवि	+	इन्द्र	=	रवींन्द्र
		मुनि	+	इन्द्र	=	मुनीन्द्र
इ + ई = ई	-	गिरि	+	ईश	=	गिरीश
		हरि	+	ईश	=	हरीश
		मुनि	+	ईश	=	मुनीश
ई + इ = ई	-	मही	+	इंद्र	=	महींद्र
		नारी	+	इंद्र	=	नारींद्र
		नगी	+	इंद्र	=	नगींद्र

ई + ई = ई	-	मनी	+	ईष	=	मनीष
		मही	+	ईश	=	महीष
		नदी	+	ईश	=	नदीश

3.

<u>उ और ऊ की संधि</u> :-

उ + उ = ऊ	-	लघु	+	उत्तर	=	लघूत्तर
		भानु	+	उदय	=	भानूदय
		विद्यु	+	उदय	=	विद्यूदय
उ + ऊ = ऊ	-	लघु	+	ऊर्मि	=	लघूर्मि
		सिंधु	+	ऊर्मि	=	सिंधूर्मि
ऊ + उ = ऊ	-	वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव
		वधू	+	उल्लेख	=	वधूल्लेख

ऊ + ऊ = ऊ	-	वधू	+	ऊर्जा	=	वधूर्जा
		भू	+	ऊर्ध्व	=	भूर्ध्व

(ख) **<u>गुण संधि</u>:-**

इसमें अ, आ के बाद इ, ई हो तो दोनों मिलकर ए हो जाते हैं, आ के बाद उ, ऊ हो तो दोनों मिलकर ओ तथा अ हो जाते हैं अथवा आ के बाद ऋ हो तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं, इसे गुण संधि कहते हैं; जैसे –

1. अ, आ के साथ इ, ई -

अ + इ = ए	-	नर	+	इंद्र	=	नरेन्द्र
अ + ई = ए	-	नर	+	ईश	=	नरेश
आ + इ = ए	-	महा	+	इन्द्र	=	महेन्द्र
आ + ई = ए	-	महा	+	ईश	=	महेश

2. अ, आ के साथ उ, ऊ -

अ + उ = ओ	-	ज्ञान	+	उपदेश	=	ज्ञानोपदेश
		वीर	+	उचित	=	वीरोचित

आ + उ = ओ	-	महा	+	उत्सव	=	महोत्सव
		चन्द्र	+	उदय	=	चन्द्रोदय
		पूर्व	+	उक्ति	=	पूर्वोक्ति
अ + ऊ = ओ	-	जल	+	ऊर्मि	=	जलोर्मि
		मन	+	ऊर्मि	=	मनोर्मि
आ + ऊ = ओ	-	महा	+	ऊर्मि	=	महोर्मि
		नीला	+	ऊर्मि	=	नीलोर्मि

3. अ, आ के साथ ऋ -

अ + ऋ = अर्	-	देव	+	ऋषि	=	देवर्षि
		सप्त	+	ऋषि	=	सप्तर्षि
आ + ऋ = अर्	-	महा	+	ऋषि	=	महर्षि

राजा + ऋषि = राजर्षि

(ग) **<u>वृद्धि संधि</u>:-**

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है, इसे वृद्धि संधि कहते हैं; जैसे -

1. अ, आ के साथ ए, ऐ -

अ + ए = ऐ	-	एक	+	एक	=	एकैक
		लोक	+	एषणा	=	लोकैषणा
अ + ऐ = ऐ	-	मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य
आ + ए = ऐ	-	सद	+	एव	=	सदैव
		तथा	+	एव	=	तथैव
आ + ऐ = ऐ	-	महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
		सदा	+	ऐश्वर्य	=	सदैश्वर्य

2. अ, आ के साथ ओ, औ -

अ + ओ = औ	-	वन	+	ओषध	=	वनऔषध
		अधर	+	ओष्ठ	=	अधरौष्ठ
आ + ओ = औ	-	महा	+	ओषधि	=	महौषधि
अ + औ = औ	-	परम	+	औषध	=	परमौषध
आ + औ = औ	-	महा	+	औषध	=	महौषध

(घ) **<u>यण संधि</u>:-**

इ, ई के आगे कोई असमान स्वर होने पर इ, ई का ऽ'य्' हो जाता है तथा उ, ऊ के आगे किसी असमान स्वर के आ जाने पर उ, ऊ का 'व्' हो जाता है अथवा 'ऋ' के आगे किसी अन्य स्वर के आ जाने पर 'ऋ' का 'र' हो जाता है, इन्हें यण – संधि कहते हैं; जैसे -

1.

इ के स्थान पर 'य'	-	यदि	+	अपि	=	यद्यपि
		इति	+	आदि	=	इत्यादि
		प्रति	+	उत्तर	=	प्रत्युत्तर
		प्रति	+	एक	=	प्रत्येक

2.

'उ' के स्थान पर 'व' - सु + अल्प = सवल्प

सु + आगत = स्वागत

अतु + एषण = अनवेषण

3.

'ऋ' के स्थान पर 'र' - पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

(ङ) **<u>अयादि संधि</u>:-**

ए, ऐ और ओ, औ से परे किसी भी स्वर के होने पर ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् तथा औ का आव् हो जाता है, इसे अयादि संधि कहते हैं; जैसे -

1. ए का अय् होना -

ए + अ - ने + अन = नयन

2. ए का आय् होना -

ऐ + अ - गै + अक = गायक

3. ओ का अव् होना –

ओ + अ	-	पो	+	अन	=	पवन

4. औ का आव् होना –

औ + अ	-	पौ	+	अक	=	पावक

व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे -

जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ
उत्	+	ज्वल	=	उज्जवल
सम्	+	वाद	=	संवाद

व्यंजन संधि निम्नलिखित प्रकार होते हैं -

(क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या च्, र्, ल्, व्, ह् या किसी स्वर से हो जाए तो क् का ग्, य् का ज्, ट् का ड् और प् का ब् हो जाता है; जैसे -

क् + ग	=	ग्ग	(दिक् + गज = दिग्गज)
क् + ई	=	गी	(वाक् + ईश = वागीश)

च् + अ	=	ज्	(अच् + अंत = अजंत)
ट् + आ	=	डा	(षट् + आनन = षडानन)
प + ज़	=	ब्ज	(अप् + ज = अब्ज)

(ख) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवा वर्ण हो जाता है; जैसे -

क् + म	=	ङ्	(वाक् + मय = वाङ्मय)
च् + न	=	ञ्	(अच् + नाश = अञ्नाश)
ट् + म	=	ण्	(षट् + मास = षण्मास)
त् + न्	=	न्	(उत् + नयन = उन्नयन)
प् + म्	=	म्	(अप् + मय = अम्मय)

(ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, म, च, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है; जैसे -

त् + भ	=	द्भ	(सत् + भावना = सद्भावना)

त् + ई	=	दी	(जगत् + ईश = जगदीश)
त् + र	=	द्र	(तत् + रूप = तद्रूप)
त् + ध	=	द्ध	(सत् + धर्म = सद्धर्म)

(घ) त् से अलग च या छ होने पर च्, ज् या झ होने पर, ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है; जैसे –

त् + च	=	च्च	उत् + चारण = उच्चारण
त् + ज	=	ज्ज	सत् + जन = सज्जन
			उत् + ज्वल = उज्जवल
त् + झ	=	ज्झ	उत् + झटिका = उज्झटिका
त् + ट	=	ट्ट	तत् + टीका = तट्टीका
त् + ड	=	ड्ड	उत् + डयन = उड्डयन
त् + ल	=	ल्ल	उत् + लास = उल्लास

(ङ) त् के बाद ल हो तो 'त' के स्थान पर 'च' और 'श' के स्थान पर 'छ' हो जाता है -

उत्	+	लास	=	उल्लास
तत्	+	लीन	=	तल्लीन
उत्	+	लेख	=	उल्लेख

(च) त् के बाद यदि श हो तो 'त' के स्थान पर 'ज' और 'श' के स्थान पर 'छ' हो जाता है -

त् + श्	=	च्छ	उत्	+	श्वास	=	उच्छवास
त् + श	=	च्छ	सत्	+	शास्त्र	=	सच्छास्त्र

(छ) त का मेल यदि ह से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है; जैसे –

त् + ह = द्ध - उत् + हार = उद्धार

त् + ह = द्ध - उत् + हरण = उद्धरण

त् + ह = द्ध - तत् + हित = तद्धित

(ज) यदि म् के बाद, क् से स् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है; जैसे -

सम्	+	बंध	=	संबंध
सम्	+	चय	=	संचय

सम्	+	तोष	=	संतोष

(झ) म् के बाद यदि म हो तो म का द्वित्व हो जाता है; जैसे –

म्	+	म	=	म्म
सम्	+	मति	=	सम्मति
सम्	+	मान	=	सम्मान

(ञ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है; जैसे –

म्	+	य	=	सम्	+	योग	=	संयोग
म्	+	र	=	सम्	+	रक्षण	=	संरक्षण
म्	+	व	=	सम्	+	विधान	=	संविधान
म्	+	व	=	सम्	+	वाद	=	संवाद
म्	+	श	=	सम्	+	शय	=	संशय

म्	+	ल	=	सम्	+	लग्न	=	संलग्न
म्	+	स	=	सम्	+	सार	=	संसार

(ट) ऋ, र्, ष् से अलग न् का ण् हो जाता है। परंतु च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, श और स का व्यवद्यान हो

(ट) ऋ, र्, ष् से अलग न् का ण् हो जाता है। परंतु च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता; जैसे –

र्	+	न	=	ण	परि	+	नाम	=	परिणाम
र्	+	म	=	ण	प्र	+	मान	=	प्रमाण

(ठ) स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् का 'ष' हो जाता है; जैसे –

म्	+	स्	=	ष
अभि	+	सेक	=	अभिषेक
वि	+	सम	=	विषम

विसर्ग संधि

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन होते हैं, उसे विसर्ग संधि कहते हैं;

जैसे - मन: + स्थित = मनोस्थिति

विसर्ग संधि के प्रमुख नियम ये हैं -

(क) विसर्ग के पहले यदि 'अ' हो और बाद में वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है;

जैसे -

मन:	+	अनुकूल	=	मनोकूल
मन:	+	रंजन	=	मनोरंजन

(ख) विसर्ग के बाद यदि च, छ हो तो विसर्ग का 'श' हो जाता है -

दु:	+	चरित्र	=	दुश्चरित्र
नि:	+	छल	=	निश्छल

(ग) विसर्ग के पहले यदि इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ हो तो विसर्ग का ष हो जाता है -

नि:	+	कलंक	=	निष्कलंक
धनु:	+	टंकार	=	धनुष्टंकार

(घ) विसर्ग के बाद यदि त, स हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है -

नम:	+	ते	=	नमस्ते
नि:	+	संतान	=	निस्संतान

(ङ) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण अथवा य्, र, ल, ष, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है; जैसे -

निः	+	जन	=	निर्जन
निः	+	आहार	=	निराहार
निः	+	लोभ	=	निर्लोभ
निः	+	यात	=	निर्यात

(च) विसर्ग से पहले अ, आ, हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे -

निः	+	रोग	=	निरोग
निः	+	रस	=	निरस

(छ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता है; जैसे -

अंतः	+	करण	=	अंतःकरण